श्याम नन्दन मिश्र
भूतपूर्व विदेश मंत्री
भारत सरकार
2 सविता विहार
दिल्ली-110092
फोन नं-2158197

प्राकृतिक दर्शन के लिपिबद्ध-कर्ता संसार चन्द्र को मैं अच्छी तरह जानता हूँ ! उनका कथन है कि यह पुस्तक दैवी प्रेरणा से लिखी गई है ! इसमें मनवन्तर का दर्शन ही नहीं, वरन उसको कियान्वयन करने के सूत्र भी प्रस्तुत हैं!

भगीरथ ने जिस प्रकार गंगा को पृथ्वी पर लाने का प्रयत्न किया था, उसी प्रकार संसार चन्द्र में धरती पर स्वर्ग उतारने की परिकल्पना की है !

यह इतना क्रान्तिकारी दर्शन है कि प्रथम तो प्रलय का दृश्य उपस्थित करेगा और फिर बाद में एक नए ब्रह्म के रूप में अभिनव सृष्टि के निर्माण की भूमिका में उतरेगा ! आज तक कल्पना की उड़ान को इतना ऊँचा छलांग भरते नहीं देखा गया ! इसलिए अगर इस पर विचार करते समय अधिकांश लोगों के मन कम्पित हो जाएँ, तो कोई आश्चर्य नहीं !

तख़रीब का अब तक के तलातुन नहीं आता !
तामीर के ओठों पर तबस्सुम नहीं आता !

इसलिए पहले तो मुझे हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि मैं इस विषय पर कलम पकड़ूं ! परन्तु यह एक ऐसा साहसिक अभियान है कि चाहे आप इससे सहमत हों या न हों, आप किसी भी हालत में इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते विरासत की परम्परा जो सदियों से चली आ रही है और जो हमारी सामाजिक रचना का मूल आधार है, उस पर प्रहार करना कोई साधारण चिन्तक का कार्य नहीं हो सकता ! आप भले ही इस असाधारणता को कोई भी नाम दे लीजिऐ, इसका मख़ौल भी उड़ा लीजिए, लेकिन इसमें निहित साहस की दाद दिए बिना नहीं रह सकते !

संसार चन्द्र को देख कर आपको ऐसा नहीं लगेगा कि वो अति क्रान्तिकारी प्रवृतियों को अपने दिमाग के किसी कोने में संजाये हुए हैं ! यह पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य की आकृति से हम उसके विचारों के बारे में कोई धारणा नहीं बना सकते !

ऐसे विचार आखिर किस परिवेश में पनपे? राजस्थान की मरुभूमि में जहाँ संसार चन्द्र पैदा हुऐ? या डा.राममनोहर लोहिया के साथी पंडित गुलाब चन्द्र दुबे की छत्रछाया में जिन्होने अपने भतीजे संसार चन्द्र को समाजवाद में संस्कारित किया ? या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकट सहयोगी पंडित भवानी प्रसाद तिवारी के सानिध्य में जिनकी पुत्री से उन्होने विवाह किया? या लन्दन के उस म्यूजियम के साऐं में जहाँ कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों का बीज बपन हुआ था, और जहाँ संसार चन्द्र काफी वर्षों तक रहे ?

निसन्देह यह पुस्तक एक असाधारण मानसिक परिवेश में रची गई है और हमें वहाँ ले जाना चाहती है जहाँ हम स्वामावतः नहीं जाना चाहते ! फिर क्या होगा इन विचारों का?

शयाम नन्दन मिश्रा
भूतपूर्व विदेश मंत्री
भारत सरकार